शकील अहमद अंसारी

बिहारशरीफ,नालंदा

१

फूलों सा खिल जाता हूं।
हृदय खोल जब मिलता हूं१

छल-धोखे के जग में पांव
फूंक-फूंककर धरता हूं।२

प्रात-काल मैं पंख खोल
दूर कहीं उड़ जाता हूं।३

कर यक़ीन बस अपनों पर
सौ-सौ धोखे खाता हूं।४

पाकर मां की नेक दुआ,
नित दिन गुल-सा खिलता हूं।५

हाथ मिलाऊं सिर्फ़ नहीं,
हृदय खोलकर मिलता हूं।६

प्रेम-दीप बनकर प्रतिपल
हृदय-द्वार पर जलता हूं।७

पीकर सारे दुख को मैं
फूलों सा मुस्काता हूं।८

निज निश्छल किलकारी से
घर-आंगन भर देता हूं।९

नभ मुझसे घबराता है,
जब भी पर फैलाता हूं।१०

बेनाम गिलानी

बिहारशरीफ,नालंदा

१

शजर पर आँच आती है तो पत्ता सूख जाता है
हवा जब गर्म होती है तो दरिया सूख जाता है

मनाज़िर दिल शिकन हों तो कलेजा सूख जाता है
ख़फ़ा अफ़्कार जब हों तो सलीक़ा सूख जाता है

कहूं क्या मुफ़्लिसी में क्या गुज़रती है ग़रीबों पर
बहुत बश्शाश रहता है प चेहरा सूख जाता है

ज़रा बादे ख़जां से कहदो ऐ गुल्शन के रखवालो
कली पज़मुर्दा होती है तो भँवरा सूख जाता है

सरापा इस्तखां हो जाता है वो ख़ुशनुमा पैकर
किसी का जब कभी भी तन ईकहरा सूख जाता है

लेहम नोशी का आदी होता है हर ज़ैग़मे दौरां
उसे जब घास मिलती है दरिंदा सूख जाता है

बहुत आगाह है शाहीन जो पर्बत पे रहता है
क़फ़स में आते ही अक्सर परींदा सूख जाता है

गुनाहों पर पशेमां जब बनी आदम कभी होगा
सग़ीरा की तो तुम छोड़ो कबीरा सूख जाता है

चलन ऐसा भी देखा है मुसलमानों की दुनिया में
बड़ी बारात के. बाईस वलीमा सूख जाता है

गए जो अल्क़मा शिबली तो ये महसूस होता है
गुज़र जाता है जब मुर्शिद ख़लीफ़ा सूख जाता है